राजस्थानी भाषा व बोलियाँ
Rajasthani language and dialects

- राजस्थानी एक भाषा है जिसमें कई बोलियाँ बोली जाती है।
  Rajasthani is a language in which many dialects are spoken.
- इन बोलियों की कई उपबोलियाँ हैं।
  These dialects have many subdialects.
- इसका अर्थ यह है कि राजस्थानी एक समृद्ध भाषा है।
  This means that Rajasthani is a rich language.
- हालांकि राजस्थानी की बोलियों में क्षेत्रानुसार भाषायी विविधता हो सकती है परन्तु मूल रूप से अर्थात् उद्भव के आधार पर यह एक है।
  Although there may be linguistic diversity in the dialects of Rajasthani according to the region, but basically, i.e. on the basis of origin, it is one.

उद्भव / Origin :–

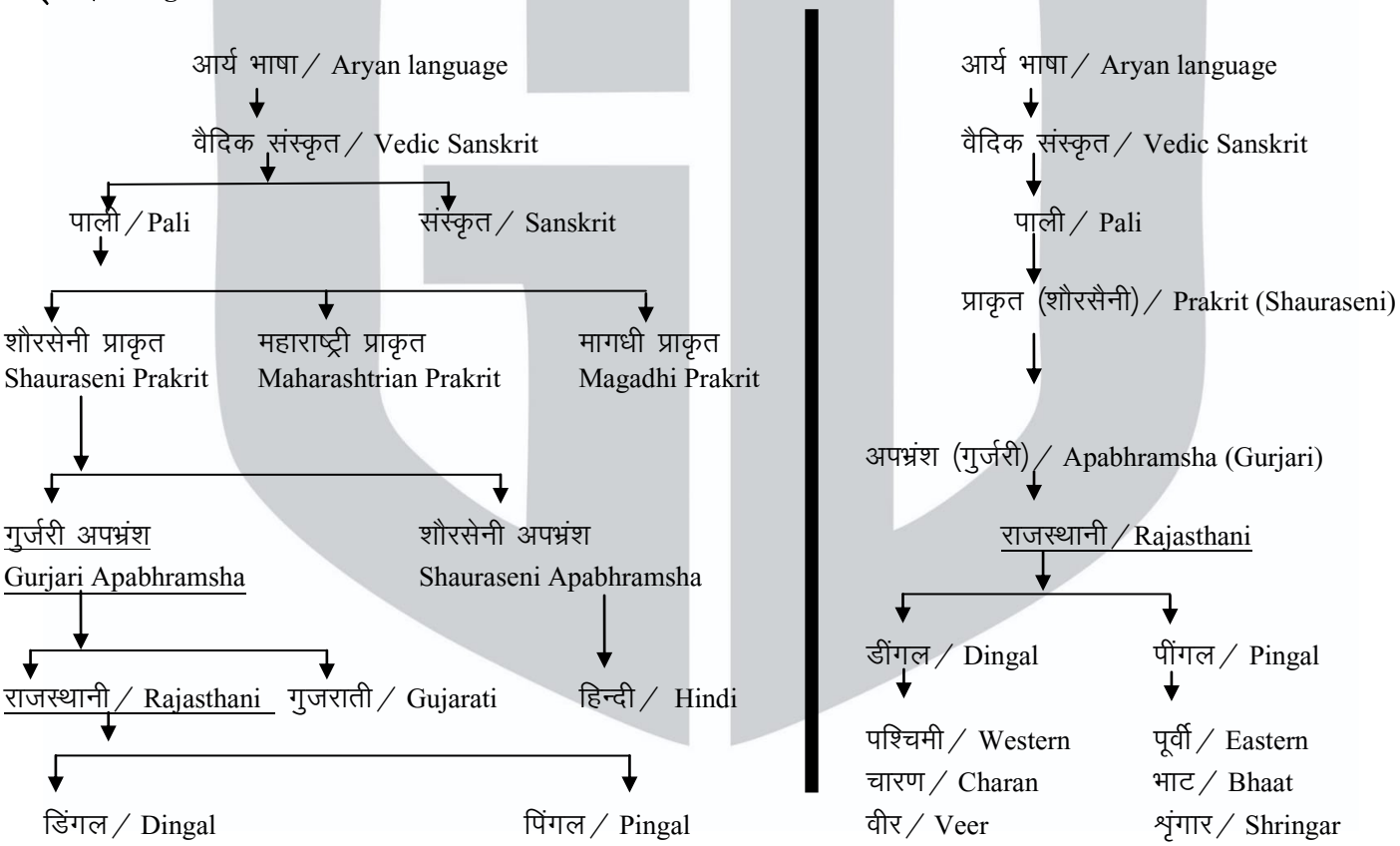

❖ राजस्थानी का साहित्यिक स्वरूप / Literary form of Rajasthani –

- प्रत्येक भाषा के दो पक्ष होते हैं एक बोलने का एक लिखने का।
  Every language has two aspects, one for speaking and one for writing.
  - बोलने का पक्ष – बोलियाँ
    Speaking aspect - Dialects
  - लिखने का पक्ष – साहित्य–शैलियाँ
    Writing aspect - Literature-styles

राजस्थानी / Rajasthani	
डिंगल (पश्चिमी राजस्थानी + मारवाड़ी) Dingal (Western Rajasthani + Marwari)	**पिंगल (पूर्वी राजस्थानी + ब्रज भाषा) Pingal (Eastern Rajasthani + Braj Bhasha)**
➢ पश्चिमी राजस्थानी का साहित्यिक स्वरूप Literary form of Western Rajasthani	➢ पूर्वी राजस्थानी का साहित्यिक स्वरूप Literary form of Eastern Rajasthani
➢ इसमें मूल रूप से मारवाड़ी का प्रयोग हुआ। Marwari was used in this.	➢ इसमें मूल रूप पूर्वी राजस्थानी की बोलियाँ तथा ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ। Dialects of Eastern Rajasthani and Braj Bhasha were used in this.
➢ इसमें अधिकतर साहित्य चारण कवियों ने लिखा। Most of the literature in this was written by Charan poets.	➢ इसमें अधिकतर साहित्य भाट कवियों ने लिखा। Most of the literature in this was written by Bhaat poets.
➢ वीर रस प्रधान Veer Ras Dominant	➢ श्रृंगार रस प्रधान Shringar Ras Dominant

नामकरण / Naming :

- उद्योतन सूरी – कुवलयमाला – 18 भाषाएँ
  Udyotan Suri - Kuvalayamala - 18 languages
  (778 AD.) ↓ 8वीं शताब्दी / 8th century; 18 languages ↓ मरूभाषा / Marubhasha
- कवि कुशल लाभ – पिंगल शिरोमणि – मारवाड़ी
  Kavi Kushal Labh - Pingal Shiromani - Marwari
- अबुल फजल – आइने–अकबरी – मारवाड़ी
  Abul Fazal - Ain-e-Akbari - Marwari
  - अबुल फजल ने प्रमुख आर्य भाषाओं में मारवाड़ी को भी शामिल किया है।
    Abul Fazal has also included Marwari in the major Aryan languages.
- जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन – Linguistic survey of India (1912) भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण – इनमें यहाँ की भाषा हेतु सर्वप्रथम राजस्थानी शब्द प्रयुक्त हुआ।
  George Abraham Grierson - Linguistic survey of India (1912) - In these, the word Rajasthani was used for the language here for the first time.

➢ विकास / Development –

- 11–13वीं सदी – गुर्जरी अपभ्रंश
  11-13th century - Gurjari Apabhramsha
- 13–16वीं सदी –प्राचीन राजस्थानी – जैन साहित्य लिखा गया।
  13-16th century - Ancient Rajasthani - Jain literature was written.
- 16–18वीं सदी – मध्यकालीन राजस्थानी (स्वर्णिम काल) – चारण साहित्य लिखा गया।
  16-18th century - Medieval Rajasthani (Golden Era) - Charan literature was written.
- 18वीं–अब तक – आधुनिक राजस्थानी (अर्वाचीन / आधुनिक) –
  18th-till now - Modern Rajasthani (Arwachin/ Adhunik)
  - इसमें यथार्थवादी साहित्य लिखा गया, जिसमें सामाजिक कुरीतियों को उजागर किया गया।
    Realistic literature was written in it, in which social evils were exposed.

➢ 16वीं सदी के बाद राजस्थानी का विकास एक स्वतंत्र भाषा के रूप में होने लगा।
After the 16th century, Rajasthani started developing as an independent language.

➢ 17वीं सदी के अंत तक आते–आते राजस्थानी पूर्णतः एक स्वतंत्र भाषा का रूप ले चुकी थी।
By the end of the 17th century, Rajasthani had completely taken the form of an independent language.

➢ 1650–1850 ई. के काल को राजस्थानी भाषा का स्वर्ण युग कहा जाता है।
The period of 1650-1850 A.D. is called the golden age of Rajasthani language.

➢ राजस्थानी का विस्तार / Expansion of Rajasthani –

- बोलने वाले – 10 करोड़ (राजस्थान, मध्यभारत के पश्चिमी भाग , सिंध, पंजाब, हरियाणा)
  Speakers - 10 crores (Rajasthan, western parts of central India, Sindh, Punjab, Haryana)
- विश्व में राजस्थानी का 16वाँ स्थान भारत में 7वाँ स्थान
  Rajasthani ranks 16th in the world, 7th in India

➢ राजस्थानी का वर्गीकरण / Classification of Rajasthani –

➢ डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन / Dr. George Abraham Grierson –

- प्रथम व्यक्ति जिन्होंने राजस्थानी का स्वतंत्र भाषा के रूप में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। अपनी पुस्तक LSOI में नौंवी जिल्द के दूसरे भाग में।
  The first person who presented a scientific analysis of Rajasthani as an independent language. In the second part of the ninth volume of his book LSOI.
- राजस्थानी की पाँच उप शाखाएँ बताई –
  He described five sub-branches of Rajasthani
  - पश्चिमी राजस्थानी – इसकी प्रतिनिधि बोलियाँ – मारवाड़ी, मेवाड़ी, वागड़ी, शेखावटी
    Western Rajasthani - its representative dialects - Marwari, Mewari, Vagdi, Shekhawati
  - मध्य–पूर्वी राजस्थानी – बोलियाँ – ढूँढाड़ी व हाड़ौती
    Central-eastern Rajasthani - dialects - Dhundhari and Hadoti
  - उत्तरी–पूर्वी राजस्थानी – मेवाती व अहीरवाटी
    North-eastern Rajasthani - Mewati and Ahirwati
  - दक्षिण–पूर्वी राजस्थानी – मालवी व नीमाड़ी
    South-eastern Rajasthani - Malvi and Nimari

- दक्षिणी राजस्थानी / Southern Rajasthani

➢ डॉ. एल. पी. टेस्सीटोरी (इटली) – बीकानेर रियासत में रहकर चारण साहित्य का अध्ययन किया। राजस्थानी बोलियों को दो भागों में बाँटा –
Dr. L. P. Tessitori (Italy) - studied Charan literature while living in Bikaner state. Divided Rajasthani dialects into two parts -

- पश्चिमी राजस्थानी – शेखावाटी, जोधपुर की खड़ी राजस्थानी, ढटकी, थली, बीकानेरी, किशनगढ़ी, खैराड़ी, सिरोही की बोलियाँ – गोड़वाड़ी एवं देवड़ावाटी
  Western Rajasthani - Shekhawati, Khari Rajasthani of Jodhpur, Dhatki, Thali, Bikaneri, Kishangarhi, Khairadi, Sirohi dialects - Godwadi and Devdavati
- पूर्वी राजस्थानी (ढूँढाड़ी) – तोरावाटी, खड़ी जयपुरी, काठैड़ी, अजमेरी, राजावाटी, चौरासी, नागरचोल, हाड़ौती।
  Eastern Rajasthani (Dhundhadi) - Toravati, Khari Jaipuri, Kathaidi, Ajmeri, Rajawati, Chaurasi, Nagarchola, Hadoti.

➢ सामान्य वर्गीकरण –1. पूर्वी राजस्थानी – ढूँढाड़ी (जयपुरी), हाड़ौती, मेवाती, अहीरवाटी
General classification - 1. Eastern Rajasthani - Dhundhari (Jaipuri), Hadoti, Mewati, Ahirwati

1. पश्चिमी राजस्थानी – मारवाड़ी, मेवाड़ी, वागड़ी एवं शेखावाटी
   Western Rajasthani - Marwari, Mewari, Vagdi and Shekhawati
   (पाँच कोस पर पाणी बदले, सात कोस पर बाणी)
   (Water changes every five miles, language changes every seven miles)

➢ राजस्थान भौगोलिक रूप से एक विस्तृत राज्य है जो कई क्षेत्रों में विभक्त है। जैसे – मेवाड़, मारवाड़, ढूँढाड़, हाड़ौती, वागड़, शेखावाटी। इन क्षेत्रों का निर्धारण भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा भाषायी आधार पर हुआ।
Rajasthan is a geographically vast state which is divided into many regions. For example - Mewar, Marwar, Dhundhar, Hadauti, Vagad, Shekhawati. These regions were determined on geographical, cultural, historical and linguistic basis.

➢ इन क्षेत्रों में बोली जाने वाली बोलियाँ इन क्षेत्रों के नाम से जानी जाने लगी। जैसे – मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूँढाड़ी, हाड़ौती, वागड़ी, शेखावाटी।
The dialects spoken in these regions came to be known by the names of these regions. For example - Marwari, Mewari, Dhundhar, Hadauti, Vagadi, Shekhawati.

➢ इस प्रकार से राजस्थान में अनेक बोलियाँ और उपबोलियाँ प्रचलित है, जिनकी संख्या 73 है।
In this way, many dialects and subdialects are prevalent in Rajasthan, the number of which is 73.

➢ इन सभी को मिलाकर राजस्थानी बनती है।
All these together form Rajasthani.

❖ **राजस्थानी भाषा की बोलियाँ व उपबोलियाँ / Dialects and subdialects of Rajasthani language –**

➢ **मारवाड़ी / Marwari –**

- मरु प्रदेश में बोली जाने के कारण इसे मारवाड़ी कहते हैं।
  because it is spoken in the desert region, it is called Marwari.
- उद्योतन सूरी ने अपनी पुस्तक 'कुवलयमाला'(778 ई.) में इसे मरूभाषा कहा गया।
  Udyotan Suri called it a desert language in his book 'Kuvalayamala' (778 AD).
- राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्र के आधे से अधिक भाग में यह 'बोली' बोली जाती है।
  this 'dialect' is spoken in more than half of the total geographical area of Rajasthan.

- अधिक क्षेत्र और अधिक लोगों द्वारा बोली जाने के कारण यह राजस्थानी की स्टेण्डर्ड या मानक बोली है। अर्थात् सामान्यतः मारवाड़ी को ही राजस्थानी माना जाता है।
  because it is spoken in more area and by more people, it is the standard dialect of Rajasthani. That is, generally Marwari is considered to be Rajasthani.
- राजस्थानी की सबसे प्राचीन बोली
  the oldest dialect of Rajasthani
- राजस्थानी की सर्वाधिक समृद्ध व महत्वपूर्ण बोली
  the most rich and important dialect of Rajasthani
- मारवाड़ी का साहित्यक स्वरूप/साहित्य लिखने की शैली – डींगल
  the literary form of Marwari/style of writing literature - Dingal
- सोरठा, छंद व मांड राग इस बोली की शिल्पगत विशेषताएँ है।
  Soratha, Chhand and Mand Raga are the artistic features of this dialect.
- **क्षेत्र –** पाली, जोधपुर, फलोदी, जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, सिरोही, जालोर, बीकानेर, नागौर, डीडवाना –कुचामन, शेखावाटी(सीकर, चुरु, झुन्झुनूँ)
  Regions - Pali, Jodhpur, Phalodi, Jaisalmer, Barmer, Balotra, Sirohi, Jalore, Bikaner, Nagaur, Didwana - Kuchaman, Shekhawati (Sikar, Churu, Jhunjhunu)
- **उपबोलियाँ / Sub-dialects –**
  - गोड़वाड़ी – बाली (पाली) से आहोर (जालौर) तक।
    Godwadi - From Bali (Pali) to Ahor (Jalore).
    - प्रमुख रचना – बीसलदेव रासौ (लेखक – नरपति नाल्ह)
      Main composition - Bisaldev Raso (Author - Narpati Nalh)
  - देवड़ावाटी – सिरोही के क्षेत्रों में (देवड़ा चौहानों के कारण)
    Devdavati - In the areas of Sirohi (due to Devda Chauhans)
  - शेखावाटी – सीकर, चुरू, झुंझुनू (शेखावत राजपूतों के कारण)
    Shekhawati - Sikar, Churu, Jhunjhunu (due to Shekhawat Rajputs)
  - मारवाड़ी की अन्य उपबोलियाँ/Other subdialect of Marwari –
    - महेश्वरी एवं ओसवाली – महेश्वरी तथा ओसवाल बणियों के द्वारा मुख्यतः बीकानेर के इलाकों में बोली जाती है।
      Maheshwari and Oswali - spoken by Maheshwari and Oswal Baniyas mainly in Bikaner areas.
    - थली–चुरु और बीकानेर के बीच के उभरे हुए भाग में
      Thali - spoken in the raised area between Churu and Bikaner
    - ढटकी – सिंध, बाड़मेर, बालोतरा
      Dhatki - Sindh. Barmer, Balotara

➢ **मालवी (मालवा, मध्यप्रदेश)/ Malvi (Malwa, Madhya Pradesh)**

- मुख्य रूप से मध्यप्रदेश में बोली जाती है।
  It is mainly spoken in Madhya Pradesh.
- राजस्थान में दक्षिणी–पूर्वी भाग में बोली जाती है।
  It is spoken in the south-eastern part of Rajasthan.
  - क्षेत्र – झालावाड़, कोटा, प्रतापगढ़
    Region - Jhalawar, Kota, Pratapgarh
- इसमें मारवाड़ी तथा ढूँढाड़ी की विशेषताएँ देखने को मिलती है।

It has the characteristics of Marwari and Dhundhari.

- इस पर मराठी का सर्वाधिक प्रभाव है।
  It is most influenced by Marathi.
- यह कर्णप्रिय व कोमल बोली है।
  It is a pleasant and soft dialect.
- मालवी की उपबोलियाँ – सोहड़वाड़ी, रतलामी,, उमठवाड़ी, नीमाड़ी, राँगड़ी
  Sub-dialects of Malvi - Sohadwadi, Ratlami, Umthwadi, Nimadi, Rangdi
  - राँगड़ी – मालवा के राजपूतों द्वारा बोली जाने वाली कर्कश बोली (मालवी+मारवाड़ी)
    Rangdi - Harsh dialect spoken by Rajputs of Malwa (Malvi+Marwadi)
  - नीमाड़ी – इसे दक्षिणी राजस्थानी भी कहते हैं। इस पर गुजराती, भीली व खानदेशी का प्रभाव है।
    Nimadi - It is also called Southern Rajasthani. It is influenced by Gujarati, Bhili and Khandeshi.

➢ **ढूँढाड़ी –** ढूँढाड़ क्षेत्र में बोली जाने के कारण इसे ढूँढाड़ी कहते हैं।
Dhundhari - It is called Dhundhari because it is spoken in the Dhundhar region.

- ढूँढ नदी का क्षेत्र (जयपुर के आस–पास का क्षेत्र)
  The area of the Dhundh river (the area around Jaipur)
  - इसे जयपुरी व झाड़शाही भी कहा जाता है।
    It is also called Jaipuri and Jharshahi.
  - इस बोली का बोली के रूप में सर्वप्रथम उल्लेख 18वीं सदी की रचना ''आठ देश गुर्जरी'' में हुआ है।
    This dialect is first mentioned as a dialect in the 18th century work "Aath Desh Gurjari".
  - संत दादू और उनके शिष्यों के अधिकतर उपदेश इसी बोली में है।
    Most of the sermons of Sant Dadu and his disciples are in this dialect.
  - क्षेत्र – उत्तरी जयपुर को छोड़कर शेष जयपुर, टोंक, दौसा, लावा, किशनगढ़, अजमेर, करौली का कुछ हिस्सा, तोरावाटी इलाका।
    Area – Rest of Jaipur except North Jaipur, Tonk, Dausa, Lava, Kishangarh, Ajmer, some part of Karauli, Torawati area.
  - इस भाषा में 'छै' का प्रयोग सर्वाधिक होता है।
    'Chhai' is used the most in this language.

  नोट :– अब उत्तरी जयपुर वाले क्षेत्र में कोटपुतली–बहरोड़ नया जिला बन चुका है।
  Note:- Now Kotputli-Baharod has become a new district in the North Jaipur area.
- ढूँढ़ाड़ी की उपबोलियाँ / sub-dialects of Dhundhari–
  - तोरावाटी – खेतड़ी(झुन्झुनूँ), नीम का थाना (सीकर), काँतली नदी का अपवाह क्षेत्र
    Torawati - Khetri (Jhunjhunu), Neem Ka Thana (Sikar), Kantli river drainage area
  - काठेड़ी – दक्षिणी जयपुर
    Kathedi - Southern Jaipur
  - राजावाटी – पूर्वी जयपुर
    Rajawati - Eastern Jaipur
  - नागरचोल – सवाईमाधोपुर, टोंक
    Nagarchola - Sawaimadhopur, Tonk

- चौरासी – टोंक
  Chaurasi - Tonk
- खड़ी जयपुरी
  Khadi Jaipuri
- किशनगढ़ी
  Kishangarhi
- अजमेरी
  Ajmeri
- जगरोती–करौली
  Jagroti-Karauli

➢ **हाड़ौती / Hadauti –**

- कोटा, बूँदी, बाराँ, झालावाड़ (हाड़ा चौहानों द्वारा शासित क्षेत्र)
  Kota, Bundi, Baran, Jhalawar (areas ruled by Hada Chauhans)
- हाड़ौती का भाषा के रूप में प्रथम प्रयोग 1875 में केलाग ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी ग्रामर' में किया।
  Hadauti was first used as a language in 1875 by Kelag in his book 'Hindi Grammar'.
- राज्य कवि **सूर्यमल्ल मिषण** की अधिकतर रचनाएँ इसी बोली में है।
  most of the compositions of the state poet Suryamall Mishn are in this dialect.
  - गाँव – हरणा गाँव (बूँदी)
    Village - Harana Gaon (Bundi)
  - बूँदी महाराव रामसिंह के दरबारी कवि
    Court poet of Bundi Maharao Ram Singh

➢ **मेवाड़ी –** राजसमंद, भीलवाड़ा, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, सलूम्बर, प्रतापगढ़
Mewari - Rajsamand, Bhilwara, Udaipur, Chittorgarh, Salumber, Pratapgarh

- धावड़ी, मेवाड़ी की एक उपबोली है।
  Dhavadi is a sub-dialect of Mewari.
- कवि महाराज चतुरसिंह जी / बावजी चतुर सिंह ने मेवाड़ी भाषा में कई ग्रन्थों की रचना की।
  Poet Maharaj Chatursingh Ji/Bavji Chatur Singh composed many texts in Mewari language.
  - जन्म – 9 फरवरी, 1880, कर्जली (मेवाड़)
    Birth - 9 February, 1880, Karjali (Mewar)
  - पिता – सूरतसिंह
    Father - Surat Singh
  - ग्रन्थ – योगसूत्र, भगवद्गीता, सांख्यकारिका
    Texts - Yogasutra, Bhagavadgita, Sankhyakarika

➢ **वागड़ी –** वागड़ क्षेत्र (डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, उदयपुर) में बोली जाती है।
Wagdi - spoken in Wagad region (Dungarpur, Banswara, Udaipur).

- वागड़ – डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़।
  Wagad - Dungarpur, Banswara, Pratapgarh.
- भीलों के द्वारा बोली जाने के कारण जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने इसे भीली कहा।
  George Abraham Grierson called it Bhili because it was spoken by Bhils.
- वागड़ क्षेत्र के प्रसिद्ध संत मावजी ने वागड़ी में कृष्ण लीलाओं की रचना की।

the famous saint Mavji of Wagad region composed Krishna Leelas in Wagadi.

- पुस्तक – चौपड़ा(तीसरे विश्वयुद्ध की भविष्यवाणी)
  Book - Chaupada (Prediction of Third World War)

- बाँगड़ / Bangar –
  - अर्द्धशुष्क मरुस्थल का कुछ हिस्सा
    Some part of semi-arid desert
  - झुन्झुनूँ, चुरु, सीकर के बीच का क्षेत्र
    Area between Jhunjhunu, Churu, Sikar
  - इसे बाँगर क्षेत्र कहा जाता है।
    It is called Bangar area.
  - इस क्षेत्र में एक स्थानीय बोली, बोली जाती है जिसे बाँगड़ी कहते हैं।
    A local dialect is spoken in this region, which is called Bangari.

➢ **खैराड़ी –** हाड़ौती + ढूँढ़ाड़ी+मेवाड़ी का मिश्रण
Khairadi - mixture of Hadoti + Dhundhari + Mewari

- बूँदी तथा शाहपुरा (भीलवाड़ा)
  Bundi and Shahpura (Bhilwara)

➢ **मेवाती –** मेवात क्षेत्र में बोली जाने के कारण मेवाती कहलाती है।
Mewati - It is called Mewati because it is spoken in Mewat region.

- मेवात क्षेत्र – मेव जाति की बहुलता वाला क्षेत्र
  Mewat region - area dominated by Meo caste
  - मुख्य – अलवर, खैरथल–तिजारा
    Main - Alwar, Khairthal-Tijara
  - अन्य – डीग, भरतपुर, धौलपुर, करौली
    Other - Deeg, Bharatpur, Dholpur, Karauli
- इसे सीमावर्तिनी बोली भी कहते हैं। क्योंकि यह हरियाणा व राजस्थान की सीमा पर बोली जाती है।
  it is also called Seemavartini dialect. Because it is spoken on the border of Haryana and Rajasthan.
- मेवाती, पश्चिमी हिन्दी तथा राजस्थानी के मध्य सेतु का कार्य करती है।
  Mewati acts as a bridge between Western Hindi and Rajasthani.
- इस पर ब्रजभाषा का प्रभाव है।
  it is influenced by Braj Bhasha.
- लालदासी व चरणदासी संप्रदायों का साहित्य इसी बोली में रचा गया।
  the literature of Laldasi and Charandasi sects was written in this dialect.
- मेवाती की उपबोलियाँ / प्रकार –
  sub-dialects/types of Mewati -
  - खड़ी मेवाती / Khari Mewati
  - राठी मेवाती / Rathi Mewati
  - कठेर मेवाती – थानागाजी, अजबगढ़
    Kather Mewati - Thanagaji, Ajabgarh

- भयाना मेवाती / Bhayana Mewati
- बिघोता मेवाती / Bighota Mewati
- मेव मेवाती / Meo Mewati
- ब्राह्मण मेवाती / Brahmin Mewati

➢ **अहीरवाटी / Ahirwati**

- इसे हीरवाल भी कहते हैं।
  it is also called Heerwal.
- इसे यादवों की बोली कहते हैं।
  it is called the dialect of Yadavs.
- राठ क्षेत्रों में बोली जाने के कारण इसे राठी भी कहते हैं।
  because it is spoken in Rath areas, it is also called Rathi.
- आभिर जाति के क्षेत्र में बोली जाने के कारण इसे अहीरवाटी भी कहते हैं।
  because it is spoken in Ahir caste area, it is also called Ahirwati.
- क्षेत्र – कोटपुतली–बहरोड़ तथा खैरथल–तिजारा (मुण्डावर)
  Area - Kotputli-Baharod and Khairthal-Tijara (Mundawar)
- यह बाँगरू (हरियाणवी) तथा मेवाती के बीच की बोली है।
  it is a dialect between Bangru (Haryanvi) and Mewati.
- हरियाणा के गुड़गाँव, महेन्द्रगढ़, नारनौल, रोहतक आदि क्षेत्रों में तथा दिल्ली के दक्षिणी भागों में बोली जाती है।
  it is spoken in Gurgaon, Mahendragarh, Narnaul, Rohtak etc. areas of Haryana and in the southern parts of Delhi.
- इस बोली की प्रमुख रचनाएँ / the major works of this dialect –
  - जोधराज की हम्मीर रासो
    Hammir Raso by Jodhraj
  - शंकरराव की भीमविलास
    Bhimvilas by Shankarrao
  - अलीबक्शी ख्याल लोक नाट्य
    Alibakshi Khayal folk drama
    - मुण्डावर के रावराजा
      Rao Raja of Mundawar
    - कृष्ण की सुन्दर रचनाएँ लिखी
      Wrote beautiful compositions on Krishna
    - राजस्थान का रसखान
      Raskhan of Rajasthan

➢ **राजस्थान के पड़ौसी राज्यों की बोलियाँ**
Dialects of the neighbouring states of Rajasthan

- ब्रज – भरतपुर, डीग, धौलपुर
  Braj - Bharatpur, Deeg, Dholpur
- पंजाबी – गंगानगर, हनुमानगढ़
  Punjabi - Ganganagar, Hanumangarh
- हरियाणवी – हनुमानगढ़, झुन्झुनूँ, अलवर, खैरथल–तिजारा

Haryanvi - Hanumangarh, Jhunjhunu, Alwar, Khairthal-Tijara

- गुजराती– बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, जालौर, सिरोही, उदयपुर
  Gujarati - Banswara, Dungarpur, Jalore, Sirohi, Udaipur

➢ **राजस्थानी के उद्भव के विभिन्न मत –**
Different views on the origin of Rajasthani -

- प्रसिद्ध इटालियन विद्वान व भाषाशास्त्री – डॉ. एल.पी. टेस्सीटोरी ने पश्चिमी राजस्थानी का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से माना है।
  The famous Italian scholar and linguist - Dr. L.P. Tessitori has considered the origin of Western Rajasthani from Shauraseni Apabhramsha.
- डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने राजस्थानी का उद्भव शौरसेनी के नागर अपभ्रंश से माना है। डॉ. पुरुषोत्तम मेनारिया इस मत का समर्थन करते हैं।
  Dr. George Abraham Grierson has considered the origin of Rajasthani from Nagar Apabhramsha of Shauraseni.Dr. Purushottam Menaria supports this view.
- डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी राजस्थानी का उद्भव शौरसेनी के सौराष्ट्री अपभ्रंश से मानते हैं।
  Dr. Suniti Kumar Chatterjee believes that Rajasthani originated from the Saurashtra Apabhramsha of Shauraseni.
- कन्हैयालाल माणिक्यलाल मुंशी तथा डॉ. मोतीलाल मेनारिया राजस्थानी का उद्भव शौरसेनी प्राकृत के गुर्जरी अपभ्रंश से मानते हैं तथा यह मत सही भी है।
  Kanhaiyalal Manikyalal Munshi and Dr. Motilal Menaria believe that Rajasthani originated from the Gurjari Apabhramsha of Shauraseni Prakrit and this view is also correct.
- श्री मोतीलाल मेनारिया ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में राजस्थानी भाषा का पहला इतिहास लिखा।
  Shri Motilal Menaria wrote the first history of Rajasthani language in his important book 'Rajasthani Language and Literature'.

➢ **राजस्थानी की लिपि – देवनागरी**
Rajasthani script - Devanagari

- देवनागरी का क्षेत्रीय स्वरूप – मुड़िया लिपि / महाजनी / घसीट / बणियावनी
  regional form of Devanagari - Mudia script/Mahajani/Ghasit/Baniyavani
  - आविष्कार – राजा टोडरमल (अकबर के राजस्व विभाग का मुखिया
    Invention - Raja Todarmal (Head of Akbar's Revenue Department)
  - टोडरमल द्वारा रचित दोहा –
    Couplet composed by Todarmal -
    देवनागरी अति कठिन, स्वर–व्यंजन व्यवहार।
    ताँते जग के हित सुगम, मुड़िया कियो प्रचार।।
    Devnagari ati kathin, Swar-Vyanjan vyavahar!
    Tante Jag ke hit sugam, Mudiya kiyo prachar!!

➢ **राजस्थानी भाषा में शोध व विकास हेतू संस्थान –**
Institute for research and development in Rajasthani language -

- राजस्थानी शोध संस्थान – चौपासनी (जोधपुर)

Rajasthani Shodh Sansthan - Chaupasni (Jodhpur)

- स्थापना – 22 अगस्त 1955
  Established - 22 August 1955
- संस्थापक – नारायण सिंह भाटी
  Founder - Narayan Singh Bhati
- पत्रिका – परम्परा
  Magazine - Parampara

○ राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी – बीकानेर
Rajasthani Language, Literature and Culture Academy - Bikaner

- इसकी मासिक पत्रिका – जागती जोत
  Its monthly magazine - Jagti Jot
- स्थापना – 25 जनवरी 1983
  Established - 25 January 1983

○ राजस्थान साहित्य अकादमी – उदयपुर
Rajasthan Sahitya Academy - Udaipur

- मासिक पत्रिका – मधुमती
  Monthly magazine - Madhumati

○ राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी – जयपुर
Rajasthan Braj Bhasha Academy - Jaipur

- त्रैमासिक पत्रिका – ब्रजशतदल
  Quarterly magazine - Brajshatdal

○ राजस्थान सिन्धी अकादमी – जयपुर
Rajasthan Sindhi Academy - Jaipur

- वार्षिक पत्रिका – रिहाण
  Annual Magazine - Rihaan

○ राजस्थान उर्दू अकादमी – जयपुर
Rajasthan Urdu Academy - Jaipur

- पत्रिका – नखलिस्तान
  Magazine - Nakhalistan

○ मरुवाणी – राजस्थानी भाषा की मासिक पत्रिका
Maruwani - monthly magazine of Rajasthani language

○ नजराणो / Nazarano –

- राजस्थानी भाषा की प्रथम फिल्म (1942)
  First film in Rajasthani language (1942)
- निर्देशक – जे.पी. कपूर
  Director - J.P. Kapoor
- अभिनेता – महिपाल
  Actor - Mahipal
- अभिनेत्री – सुनयना
  Actress - Sunayana

○ लाज राखो राणी सती – प्रथम राजस्थानी रंगीन फिल्म (1973)
Laaj Rakho Rani Sati - First Rajasthani Colour Film (1973)

- डूँगर रो भेद – प्रथम राजस्थानी बाल फिल्म (1985)
  Dungar Ro Bhed - First Rajasthani Children's Film (1985)